ORIGINAL RESEARCH PAPER

Arts

KEY WORDS: ज्ञान कोश वस्तुनिठ सांगीतिक स्वरलिपि त्रिवृत षिल्प लक्ष्य–लक्षण शैक्षिक दर्षन शैक्षिक दर्शन अभिक्षमता मापन

भारतीय संगीत तथा शोध

यास्मीन सिंह कथक नृत्यांगना–रायगढ़ घराना पीएच.डी. स्कॉलर

ABSTRACT

किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बार–बार मनोयोग एवं एकाग्रतापूर्वक कार्य करना ही अनुसंधान है। अनुसंधानकर्ता अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु तत्परता, जागरूकता एवं एकाग्रता के साथ कार्य करता है। सामाजिक क्षेत्रों में प्रश्नों के उत्तर खोजने के क्रमबद्ध एवं सुव्यवस्थित प्रयास को सामाजिक शोध/अनुसंधान/अन्वेक्षण या खोज कहा जाता है।
मनुष्य में वातावरण को समझने की प्रवृति होती है। आदिकाल से ही मानव जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है उनके विषय को जानने के लिए जिज्ञासु रहा है। मानव का प्रयत्न, जब वातावरण को समझने और समस्याओं को हल करने लिए भली–भाँति सुनिष्चित और सुव्यवस्थित होता है तो उसे अनुसंधान कहते हैं।
मनुष्य जिन विशयों को जानने के लिये तथ्यों को एकत्रित करता है हम उन्हें ज्ञान की संज्ञा देते हैं। ज्ञान – अनेक तथ्यों, सिद्धान्तों, नियमों, मान्यताओं, प्रक्रियाओं आदि का संकलन है। मानव इस ज्ञान संकलन के माध्यम से अपनी समस्याओं तथा जिज्ञासाओं का समाधान करता है एवं अपने व्यवहार को इसकी जानकारी के द्वारा परिवतर्तित, संशोधित एवं निर्मित करता है।

ज्ञान का एक मुख्य स्रोत वैयक्तिक अनुभव है। अनुभव अनेक तथ्यों पर आधारित होता है, जैसे मनःस्थिति, पूर्व घटनायें, व्यक्ति के जीवन मूल्य आदि, इसी के कारण एक ही घटना के संबंध में विभिन्न व्यक्ति विभिन्न प्रकार के अनुभव बताते हैं। इस प्रकार के ज्ञान की अनेक सीमाएँ हैं क्योंकि कोई भी अन्य व्यक्ति इस प्रकार के ज्ञान प्राप्ति को प्रामाणिक नहीं कर सकता है। प्रामाणिकता के अभाव के कारण ही इस प्रकार के ज्ञान को निम्न कोटि का ज्ञान कहा जाता है।

ज्ञान प्राप्ति का मुख्य स्रोत निगमन विधि है। इस प्रकार के अनुमान में आश्रय वाक्यों को सत्य मानकर केवल आकारगत सत्य पर विचार किया जाता है। निगमन अनुमान से प्राप्त ज्ञान में केवल इस बात का परिपालन किया जाता है कि तर्क में न्याययुक्त नियमों का उचित पालन किया गया है या नहीं। इस प्रकार के ज्ञान में आकारगत सत्य तो होता है परन्तु वस्तुगत सत्य नहीं होता। इस विधि की मुख्य सीमा यह है कि इसमें केवल पूर्व ज्ञान के माध्यम से ही निश्कर्श ज्ञात किया जाता है। अतः नवीन ज्ञान की उत्पत्ति संभव नहीं है।

निगमनात्मक अनुमान में सामान्य तर्क द्वारा वस्तुगत सत्य को सिद्ध मान लिया जाता है, परन्तु आगमन में उसे सिद्ध करने का प्रयास किया जाता है तथा सिद्ध हो जाने पर अनुमान ज्ञात किया जाता है। आगमन विधि कठिन तो है पर असंभव नहीं है। इसके माध्यम से नवीन ज्ञान की प्राप्ति होती है।

ज्ञान प्राप्ति की वैज्ञानिक विधि एक महत्वपूर्ण विधि है। इस विधि के माध्यम से व्यवस्थित तथा उद्देश्य सहित तथ्यों को संग्रहित किया जाता है। निगमन व आगमन दोनों विधियों का प्रयोग भी इसमें किया जाता है।

अनुसंधान वह बौद्धिक क्रिया है, जो नवीन ज्ञान उत्पन्न करती है या पूर्वगामी त्रुटियों या अशुद्ध धारणाओं का संशोधन करती है और व्यवस्थित ढंग से वर्तमान ज्ञान कोश में वृद्धि करती है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा के अन्तर्गत अनुसंधान शब्द का प्रयोग होता है। समाजशास्त्र या शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान या राजनीति विज्ञान में अनुसंधान शब्द का प्रयोग किसी न किसी रूप में होता है। किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये बार–बार मनोयोग एवं एकाग्रतापूर्वक कार्य करना ही अनुसंधान है।

अनुसंधान, वस्तुओं, प्रत्ययों तथा संकेतों आदि को कुशलतापूर्वक व्यवस्थित करना है, जिसका उद्देश्य सामान्यीकरण द्वारा ज्ञान का विकास परिमार्जन या सत्यापन होता है। चाहे वह ज्ञान व्यवहार में सहायक हो या कला में।

शोध की प्रकृति एवं प्रक्रिया

शोध एक स्वतः पुश्टमान प्रक्रिया है, जिसका आदि तो है पर अन्त नहीं। ज्ञान के क्षेत्र में शोध कार्य निरन्तर जारी रहता है, यह किसी एक सीमा तक पहुँचकर रूक नहीं जाता, निरन्तर आगे बढता रहता है। शोध के निम्न तत्व विशेश रूप से ध्यान आकर्शित करते हैं–

1. शोध में सामान्य सिद्धांतों की खोज पर विशेश जोर दिया जाता है।
2. शोधकर्ता व्यक्तिगत भावों तथा पसंदों को अनुसंधान प्रक्रिया से निश्कासित करता है।
3. इसके द्वारा सैद्धांतिक या व्यावहारिक समस्या के समाधान के लिए प्रयत्न किया जाता है।
4. शोध एक अनुभवपूर्ण, व्यवस्थित एवं निश्चित खोज है।
5. शोध की प्रक्रिया वैज्ञानिक है।
6. इसमें विश्वसनीय, वैध एवं वस्तुनिश्ठ उपकरणों का प्रयोग होता है।
7. प्रदत्तों को मात्रात्मक रूप में संगठित करके सांख्यिक विधियों का उपयोग किया जाता है।
8. जो निश्कर्श ज्ञात किये जाते हैं वे पूर्णरूप से प्रदत्तों के विश्लेशण पर आधारित होते हैं।
9. सम्पूर्ण अनुसंधान प्रक्रिया का प्रतिवेदन तैयार किया जाता है।

संगीत में शोध की दिशाएँ

संगीत में अनुसंधान के अत्यन्त व्यापक क्षेत्र हैं। आधुनिक युग में भारतीय संगीत शास्त्र के क्षेत्र में थोड़ा बहुत काम हुआ है। भारत का प्राचीन संगीत या तो लिपिबद्ध रूप में रखा नहीं गया और यदि रखा भी गया तो प्राप्त नहीं होता। अतः सांगीतिक स्वरलिपि के आधार पर प्राचीन संगीत का स्वरूप निर्धारण, संकलन संग्रह, सम्पादन आदि कुछ भी सम्भव नहीं है। प्रयोगिक संगीत गायक–वादकों के पास मौखिक परम्परा से चला जा रहा था, जो अशिक्षित होने के कारण उसे स्वयं लिपिबद्ध नहीं कर सकते थे और न ही करने देना चाहते थे। समाज में संगीत का स्थान हेय माना जाने लगा था। इसलिए इस क्षेत्र में कुछ भी काम करना लगभग असम्भव था। प्राचीन ग्रंथों की शैली के कारण प्रायः पिछले सौ वर्शों से लक्ष्य और शास्त्र का सम्बन्ध टूट जाने से संगीत शास्त्र दुरूह हो गया था। इसलिए जो लोग इस क्षेत्र में काम करने में प्रवृत्त भी हुए, उनके प्राचीन शास्त्रों को समझ न सकने के कारण ऐसी धारणा बन गई कि प्राचीन सिद्धान्तों का आधुनिक लक्ष्य से कोई सम्बन्ध नहीं है, इसलिए उनका अध्ययन करना व्यर्थ है, फिर भी प्राचीन सिद्धान्तों का निरूपण सबने अपने–अपने ढंग से किया, लेकिन वह उचित रूप से नहीं हो पाया।

संगीत की उत्पत्ति अनेक मानसिक अनुभूतियों के क्रम और पारस्परिक संबंध से होती है। मानव जाति के विकास के आदिमकाल में संगीत का अस्तित्व पाया गया है। भाशा के बाद लिपि और उसके बाद व्याकरण शास्त्र का निर्माण हुआ, वैसे ही गान के बाद वाद्य और वाद्य के बाद संगीत शास्त्र लिखा गया। गीत, वाद्य और नृत्य को वैदिकों की भाशा में त्रिवृत शिल्प कहा जाता था।

संगीत में अनुसंधान के तीन मूल शोध पद्धति है –

1. Historical Research (ऐतिहासिक अनुसंधान)
2. Descriptive Research (वर्णनात्मक अनुसंधान)
3. Experimental Research (प्रयोगात्मक अनुसंधान)

संगीत में ऐतिहासिक अनुसंधान

संगीत में ऐतिहासिक अनुसंधान का लक्ष्य अतीत में संगीत की परिस्थितियों, मान्यताओं, पद्धतियों एवं क्रमिका विकास का पता लगाना है। ऐतिहासिक अनुसंधान यह दर्शाते हैं कि भूतकाल में हुई घटनाओं का विवरण, खोज, विवेचना, व्याख्या, विश्लेशण तथा निश्कर्श के सामान्यीकरण के लिए किया जाता है। अतीत का अध्ययन हमें वर्तमान परिस्थितियों को समझनें में सहायक होता है। इतिहास के अध्ययन से चाहे वह किसी भी काल का क्यों न हो, अपने पूर्वजों की कृतियों पर गर्व होता है तथा प्रेरणादायक होता है।

संगीत में वर्णनात्मक अनुसंधान

वर्णनात्मक शोध से तात्पर्य है कि "वर्तमान में क्या है"। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत वर्तमान में उपस्थित घटनाओं का विवरण, खोज, विवेचना, विश्लेशण, व्याख्या तथा निश्कर्शों का सामान्यीकरण प्रस्तुत किया जाता है, ताकि इनका अपरिवर्तनीय घटकों के माध्यम से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके और वर्तमान परिस्थितियों से उनका सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

संगीत में प्रयोगात्मक अनुसंधान

प्रयोगात्मक शोध का उद्देश्य यह दर्शाना है "कि क्या होगा" यदि कुछ घटकों को नियन्त्रित अथवा परिवर्तित कर दिया जाए। इसका मुख्य केन्द्र घटकों के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन है। प्रयोगात्मक शोध के मुख्य अंग परिकल्पित अनुमान होते हैं।

सांगीतिक अनुसंधान के सभी क्षेत्र भी इस सामान्य वर्गीकरण के अन्तर्गत आ जाते हैं। संगीत एक प्रयोगिक कला होने के कारण इसमें कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिसके लिए विशिश्ट शोध प्रक्रिया एवं प्रविधि की आवश्यकता है। संगीत में शोध की दिशाओं का निम्नलिखित प्रकार से आंकलन किया जाता है–

संगीत शास्त्र

Musicology शब्द Music से बना है। भारतीय संगीत शास्त्र, संगीत का शास्त्र है, जिसमें गीत और वाद्य के साथ–साथ नृत्य पर भी विचार होता है। भारतीय संगीत शास्त्र अर्थात् Musicology का आधार अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति है। अनुसंधान की वह वैज्ञानिक पद्धति अत्यन्त स्थूल है। भारतीय संगीत अत्यन्त सूक्ष्म है, जो दर्शन और योग पर आधारित है। अतः इस क्षेत्र में अनुसंधान अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर होता है।

संगीत एक अमूर्त कला है। संगीत के कई आयाम हमसे छूट गए हैं, शास्त्र में और प्रयोग में अन्तराल हमारी मुख्य समस्या रही हैं संगीत प्रयोग शास्त्र है। संगीत केवल पठनीय विषय ही नहीं है, यह तो प्रयोगात्मक ललित कला है, जिसका अध्ययन मानव संस्कृति के उद्भव से करता आया है।

किसी भी देश या जाति की या किसी भी युग की संस्कृति और उसकी बौद्धिक दशा का मूल्य उसके संगीत शास्त्र की विवेचना से आँका जा सकता है। इस उद्देश्य की पूर्ति लक्ष्य–लक्षण युक्त संगीत शास्त्र के अध्ययन से ही हो सकती है। राग द्वेष तथा पूर्वाग्रहों की भावना होकर पारिभाशिक शब्दावली का चिन्तन, मनन एवं विवेचन ही संगीत शास्त्रीय शोध का प्रथम लक्ष्य है। संगीत की किसी भी प्रणाली का मूल्य उसकी पद्धति के अध्ययन, उसकी परम्परा पर विचार और उसकी प्रचलित परिपाटी में क्रियात्मक रूचि के द्वारा ही समझा जा सकता है। प्रत्येक संगीत पद्धति का भूत, वर्तमान और भविश्य है। इसलिए उसके इतिहास, उसके व्यवहार और उसकी सम्भावनाओं पर गहन विचार करके ही उसके महत्व को समझा जा सकता है। संगीत शास्त्र के शोध की समस्याओं को मुख्यतः तीन वर्गों में बाँटा गया है – 1. संगीत का शास्त्रीय विवेचन, 2. संगीत का समाजशास्त्रीय अध्ययन, 3. संगीत का मूल तत्व।

संगीत के तकनीकी विशय जैसे स्वर, राग, ताल, संगीत पद्धतियाँ, मूर्च्छना, जाति आदि शोध के विशय हैं। ऐसे शोधों के अन्तर्गत संगीत के मूल तत्वों का अध्ययन किया जा सकता है। ध्वनि संगीत का मूलाधार है। ध्वनि विज्ञान का विवेचन संगीत से कभी अछुता नहीं रह सकता क्योंकि संगीत ध्वनि में निहित शक्तियों के योग का एक बहुत सबल क्षेत्र है। संगीत के संदर्भ में ध्वनि

का उपयोग वाद्य यंत्रों के निर्माण, ध्वनि का अंकन और ध्वनि प्रसारण के माध्यम के रूप में होता है।

संगीत शिक्षण

संगीत शिक्षण प्राचीन काल से भारतीय शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। संगीत को शिक्षा के पाठ्यक्रम में अभी कुछ ही वर्शों से शामिल किया गया है। इससे पहले संगीत शिक्षा केवल गुरूओं द्वारा ही प्राप्त होती थी। गुरूकुल व्यवस्था से निकलकर संगीत शिक्षा घरानों के रूप में विकसित हुई। यद्यपि संगीत का घरानों के रूप में विकसित होना संगीत की विशिश्टताओं को सुरक्षित रखने के कारण ही था, परन्तु घरानों की संकुचित मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप संगीत शिक्षा का विशय कुछ व्यक्ति विशेश के लिए ही रह गया था, परन्तु आधुनिक काल में पं. विश्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. भातखण्डे के अथक प्रयत्नों से आज संगीत आधिकांश स्कूल व कॉलेजों में विशय के रूप में पढ़ाया जाता है। पाठ्यक्रम में संगीत एक नया विशय होने के कारण अभी संगीत शिक्षा के क्षेत्र में बहुत अनुसंधान की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त संगीत शिक्षण की नई विधियाँ और तकनीकें खोजने की आवश्यकता है जिससे संगीत केवल विशय के रूप में ही नहीं अपितु विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए भी सहायक हो सके। संगीत शिक्षण के क्षेत्र में निम्नलिखित विशयों पर अनुसंधान किए जा सकते हैं–

I. शैक्षिक दर्शन – शैक्षिक दर्शन ही शिक्षा का उद्देश्य निश्चित करता है क्योंकि यही जीवन के मूल्यों को भी निर्धारित करता है, जिनके लिए शिक्षा तैयारी करवाती है। संगीत की शिक्षा जीवन के मूल्य निर्धारण में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रत्येक राश्ट्र की संस्कृति में कोई न कोई विशेशता होती है और वही उसकी शक्ति होती है। जीवन तथा शिक्षा के भारतीय लक्ष्यों को पूर्णतः समझने और उनकी नींव पर नये शैक्षिक दर्शन का निर्माण करने के लिए हमें अपने प्राचीन ग्रंथों तथा महान व्यक्तियों के विचारों का गहन और अनुसंधानात्मक अध्ययन करना होगा।

शैक्षिक दर्शन में अनुसंधान का अर्थ है, दूसरे व्यक्तियों या किसी समाज के विचारों को समझना और अर्थीकरण द्वारा उनके अनुकुल शिक्षा के लक्ष्य तथा रूप को निर्धारित करना तथा उनका संकलन करके एक अर्थपूर्ण शैक्षिक दर्शन प्रस्तुत करना होता है।

II. संगीत शिक्षा का संगठन एवं पाठ्यक्रम – संगीत शिक्षा के शैक्षिक संगठन के अन्तर्गत विद्यालय की सभी आन्तरिक व्यवस्थाएँ आती हैं जैसे भवन, साज–सामान, समय–सारणी, पुस्तकालय, परीक्षा, पाठेत्तर कार्यक्रम आदि। संगीत शिक्षा के विभिन्न आयाम इन उपलब्धियों पर आधारित किए जा सकते हैं, जिनकी आज के परिवेश में अत्यन्त आवश्यकता है।

संगीत शिक्षा के पाठ्यक्रम का क्षेत्र अनुसंधान के लिए बहुत विस्तृत है। हमने अभी तक अनुसंधान के द्वारा मार्ग प्रशस्त नहीं किये, जिससे हर मार्ग पर संगीत शिक्षण के नीति निर्णायकों के पग दृढ़ता से उठ सकें। भारतीय शैक्षिक शासन प्रणाली एवं संस्कृति पाश्चात्य देशों की प्रणाली एवं संस्कृति से भिन्न है। समाज परम्परागत कार्यक्रमों को छोड़ने में बहुत हिचकिचाता है। अनुसंधान के द्वारा पाठ्यक्रम से सम्बद्ध विभिन्न समस्याओं के समाधान ढूँढ सकते हैं। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं–

- विभिन्न स्तरों पर संगीत के पाठ्यक्रमों का विश्लेशण करके हम देख सकते हैं कि उनके मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा दार्शनिक आधार सबल हैं अथवा नहीं। इस पर भी विचार हो सकता है कि उनमें क्या संशोधन हो सकते हैं और कहाँ–कहाँ आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है।
- विशिश्ट पाठ्यक्रम से विद्यार्थियों को पूर्णतः लाभान्वित करने के लिए अध्यापकों की शैक्षिक तैयारी तथा प्रशिक्षण किस प्रकार के होने चाहिए।
- हर स्तर के पाठ्यक्रम के लिए किस प्रकार की पुस्तकें तथा अन्य सहायक सामग्रियाँ उपयुक्त होंगी ?
- अनुसंधान के द्वारा ही पाठ्यक्रम के विभिन्न लक्ष्यों की पूर्ति के मूल्यांकन हेतु उपयुक्त विधियों की खोज करनी होगी।
- संगीत के क्रियात्मक पक्ष को अधिक उपयोगी एवं अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए विभिन्न पक्षों पर अनुसंधान अत्यन्त आवश्यक है।

III. संगीत शिक्षण विधि–तन्त्र – विद्यालय का मुख्य लक्ष्य अध्यापन होता है और शिक्षण विधि उनके पाठ्यक्रम पर आधारित होती है, किन्तु उसमें विद्यार्थियों के बौद्धिक तथा सामाजिक स्तर, अध्यापकों के व्यक्तित्व तथा उपकरणों की उपलब्धि के अनुसार परिवर्तन करना पड़ता है। यह ज्ञात करने के लिए कि संगीत–शिक्षण के लिए विभिन्न संयोगों में से कौन सी विधि अधिक सफल होगी, इस क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रयोगिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान की आवश्यकता है।

IV. संगीत अध्यापन का प्रशिक्षण – इस क्षेत्र में उचित शिक्षण विधियाँ खोज कर छात्र–अध्यापकों को उनमें प्रशिक्षित करना होगा। हर देश और काल में आदर्श अध्यापक की धारणा भिन्न होती है। अतः संगीत शिक्षक से भी आज के परिवेश में भिन्न अपेक्षाएँ की जाती हैं। इन धारणाओं और अपेक्षाओं के आधार पर छात्र अध्यापक के चयन हेतु अभिक्षमता परीक्षण मालाएँ तैयार करनी पड़ेंगी।

V. संगीत का शैक्षिक मनोविज्ञान – शैक्षिक मनोविज्ञान के अन्तर्गत तरह–तरह के व्यवहार सीखने के नियम तथा शिक्षण विधियों की जानकारी के लिए तथा व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया में मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संगीत के शैक्षिक–मनोविज्ञान के क्षेत्र हैं। इस प्रकार के अनुसंधानों द्वारा यह भी ज्ञात करना पड़ता है कि बालकों के विकास पर विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों तथा परिस्थितियों का क्या प्रभाव पड़ता है।

VI. संगीत का शैक्षिक मापन – संगीत के शैक्षिक मापन यन्त्रों की आवश्यकता है जिन पर अनुसंधान करके उन्हें वैधता तथा विश्वसनीयता प्रदान की जा सकती है।

1. बुद्धि परीक्षण
2. अभिक्षमता मापन
3. उपलब्धि परीक्षण
4. निश्पादन परीक्षण
5. नदानात्मक परीक्षण
6. व्यक्तित्व परीक्षण
7. संवेग, प्रेरणा, रूचि, अभिवृत्ति समायोजन, असामान्य आदि का परीक्षण
8. सांगीतिक योग्यता परीक्षण
9. सांगीतिक प्रतिभा परीक्षण

VII. तुलनात्मक शिक्षा – जब किसी सांगीतिक शिक्षा सम्बन्धी समस्या का अध्ययन दो या अधिक स्थानों की शैक्षिक परिस्थितियों की तुलना करके किया जाता है तो वह तुलनात्मक शिक्षा का अनुसंधान होता है।

दत्त संकलन

शोध प्रक्रिया का सक्रीय चरण दत्त संकलन है। शोध के लिए दत्त सामग्री शोधकर्ता के चिन्तन का आधार है। शोध कार्य की व्याख्या तथा शोध की समस्त प्रविधि दत्त संकलन के कार्य से अनुशासित रहती है। स्रोत का सीधा प्रयोग मौलिक कहा जाता है। मौलिक स्रोत प्रत्यक्ष साक्षी है। ये वास्तविक पर्यवेक्षक अथवा भाग लेने वाले द्वारा प्रतिवेदित होते हैं जो किसी घटना, प्रमाण पत्र, सामयिक लेख स्मारक से सम्बन्धित होते हैं। मौखिक साक्ष्य मौलिक स्रोत माना जाता है। दवैतीयिक स्रोत वे विवरण हैं जो प्रत्यक्ष साक्षी द्वारा प्रतिवेदित नहीं होते। उसने वास्तविक पर्यवेक्षक से बातचीत की हो या पर्यवेक्षक का प्रतिवेदन पढ़ा हो परन्तु उसका प्रमाण वास्तविक भाग लेने वाले या पर्यवेक्षक का नहीं हो सकता। दवैतीयिक स्रोत का प्रयोग कभी–कभी किया जा सकता है परन्तु शोधकर्ता को इनका प्रयोग तभी करना चाहिए जब मौलिक दत्त उपलब्ध न हो क्योंकि सूचना को आगे देते हुए उसका विरूपण हो जाता है।

दत्त संकलन के स्रोत

लिखित सामग्री के स्रोत – पुस्तकालय एवं संग्रहालय
उत्कीर्ण सामग्री के स्रोत – शिलालेख एवं पुरातत्व
मौखिक सामग्री के स्रोत – सूचकों द्वारा एवं यंत्रों द्वारा

अन्वेषण / अभिमत प्रपत्र

यह दत्त संकलन के ऐसे उपकरण है, जिनके माध्यम से प्रस्तावित अध्ययन के सम्बन्ध में विशिश्ट तथ्यों का अन्वेशण तथा सम्बन्धित जानकारी प्राप्त की जाती है। इसके लिए अत्यन्त सावधानीपूर्वक तैयार किए गए पप्रत्रों अथवा प्रारूपों का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पप्रत्रों में से सर्वाधिक प्रयुक्त होने वाला उपकरण प्रश्नावली है, जिसका प्रयोग तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

प्रश्नावली के प्रकार – प्रश्नों के आधार पर प्रश्नावली दो प्रकार की हो सकती है–
1. संरचनात्मक, संवृत, सीमित, प्रतिबंधित
2. असंरचात्मक, विवृत्त, मुक्त, अप्रतिबंधित

साक्षात्कार

साक्षात्कार भी दत्त संकलन का एक प्रमुख उपकरण है। संगीत के क्षेत्र में, जहाँ दत्त सामग्री पुस्तकों तथा अन्य पठनीय सामग्री से नगण्य रूप में उपलब्ध है, वहाँ साक्षात्कार पद्धति का सर्वाधिक उपयोग किया जाता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

एक सुसंगठित संदर्भ ग्रंथ सूची शोध प्रतिवेदन का एक प्रमुख अंग है। ग्रंथ सूची में शोध प्रबन्ध में प्रयुक्त किए गए सभी संदर्भ तथा सम्बन्धित क्षेत्र के सभी सम्बन्धित संदर्भों को सम्मिलित किया जाता है। संदर्भ ग्रंथ सूची शोध प्रबन्ध के लिए पूर्ण रूपेण पूरक होती है। एक सुव्यवस्थित तथा सुसंगठित संदर्भ ग्रंथ सूची शोध प्रबन्ध के स्तर पर संकेत करती है। इससे उन अनुसंधानकर्ताओं को विशेश लाभ पहुँचता है जो या तो उसी समस्या पर विकासात्मक रूप से अध्ययन करना चाहते हैं अथवा समस्या के अन्य पक्ष का अध्ययन करना चाहते हैं। साथ ही पाद–टिप्पणी के किसी संदर्भ का पूर्णतः अवलोकन करना हो तो रचना के पूर्व वर्णन के लिए भी संदर्भ सूची का अध्ययन लाभकारी होता है।

षोध प्रबन्ध का लेखन

शोध प्रबन्ध की भाशा सृजनात्मक, स्पश्ट तथा संक्षिप्त होनी चाहिए। भाशा, प्रतिवेदन के विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है जो शोध के तथ्यों को ऐसे ढंग से व्यक्त करता है कि पढ़ने वाले को भाव विभोर कर देता है।

उपर्युक्त सम्पूर्ण विश्लेषण से संगीत में शोध के नीति सुस्पष्ट रूप से प्रकाशित एवं प्रतिफलित हो सकता है। संगीत में शोध कार्य हेतु उपर्युक्त सभी तथ्यों पर विशेष रूप से ध्यान केन्द्रित करना आवश्यक है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा डॉ. मनोरमा, संगीत के अनुसंधान प्रक्रिया, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकुला, प्रथम संस्करण 1990, द्वितीय संस्करण 2013.
2. Koli L.N, Research methodology, Y.K.Publishers, Agra, First Edition 2006, Second Edition 2013.
3. कोली लक्ष्मी नारायण, रिसर्च मैथडोलॉजी, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, प्रथम संस्करणः 2003, द्वितीय संस्करणः 2010.